Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / February 2025 / Special Issue 1 Volume V

22

# सुषम बेदी के 'गाथा अमरबेल की' उपन्यास में नारी मनोविज्ञान का चित्रण

**डॉ. अनिल बाबुलाल सूर्यवंशी**
हिंदी विभाग प्रमुख एवं सहयोगी प्राध्यापक
महात्मा गांधी शिक्षण मंडळ संचलित कला, शास्त्र एवं वाणिज्य महाविद्यालय, चोपडा, जलगांव-महाराष्ट्र

---

**प्रस्तावना :**

सुषम बेदी ने अपने कथा-साहित्य में मनोवैज्ञानिक उपकरणों को आधार बनाया है। व्यक्ति और समाज के अन्तः संबंधों से उद्धृत व्यक्ति का व्यवहार ही मनोविज्ञान का विषय है। लेखिका ने भी इसी वैयक्तिक अंतर्मन को अपनी लेखनी में उजागर किया है। स्त्री के उस रूप को दिखाने का प्रयास किया है जहाँ वह पीड़ा को नियति मानकर भोगती नहीं है बल्कि वह सदैव उस पीड़ा से मुक्ति का माध्यम खोजती रहती है। वह भी वही तर्क लागू कर लेती है जो पुरुष समाज ने अपने लिये तैयार किये थे।

सुषम बेदी हिंदी भाषा के शैक्षणिक शोधो में भी सक्रीय रही और उन्होंने हिंदी में मूल पठन और श्रवण समझ सामग्री विकसित करने में अपनी अहम भूमिका निभाई। इनमें से कई सामग्रियाँ आंतरजाल पर उपलब्ध हैं। उनकी 'भाषा कक्षा में प्रामाणिक सामग्री का उपयोग: हिंदी में एक मामला' को दक्षिण एशियाई भाषाओं के शिक्षण और अधिग्रहण नामक संकलन में शामिल किया गया था। १९९० से १९९१ तक, उन्होंने बीबीसी के साप्ताहिक कार्यक्रम, *लेटर्स फ्रॉम अब्रॉड* में योगदान दिया, जिसमें उन्होंने न्यूयॉर्क में जीवन के दैनिक मुद्दों पर चर्चा की।

**संबोध शब्द :** मनोविज्ञान, यथार्थवाद, मानसिकता, प्रतिकूल, आलोचना, प्रवासी साहित्यकार, संघर्षीलता, अंतर्मन, विद्रोहिणी।

**विषय प्रवेश :**

मनोविज्ञान मानव व्यवहार का विज्ञान है। मनुष्य समाज में रहता है इसमें कई प्रकार की दुर्बलताएँ, अक्षमताएँ तथा मनोविकार हो सकते हैं। सुख-दुःख, आशा-निराशा उसके जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रत्येक परिस्थिति में स्वयं को बालना उसके लिए सामाजिक सामंजस्य कहलाता है किन्तु परिस्थितियों के अनुकूल न ढलने के कारण उसके व्यवहार अथवा जीवन शैली पर परोक्ष प्रभाव पड़ता है जिसकी प्रतिक्रिया उसके व्यवहार में उद्घाटित होती है। "प्रतिकूल परिस्थितियों में वह कैसा व्यवहार करता है? क्यूँ करता है? इन बातों का अध्ययन जो विज्ञान करता है, वही मनोविज्ञान अथवा मन का विज्ञान कहलाता है।"[१]

सुषम बेदी एक प्रवासी साहित्यकार है जिन्होंने अपनी रचना संसार द्वारा न केवल प्रवासी स्त्रियों का चित्रण किया है, बल्कि प्रयास में रहने वाली स्त्रियों की समस्याओं के तमाम पक्षों को भी पाठकों के सामने लाने का सफलतापूर्वक प्रयास किया है। प्रवासी हिन्दी साहित्य के माध्यम से स्त्रियों की वास्तविक स्थिति, उनकी अस्मिता, उनके मूल्यबोध, नारी मनोविज्ञान को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

'गाथा अमरबेल की' उपन्यास नारी मन की पड़ताल करता है। जीवन के यथार्थ पर आधारित 'गाथा अमरबेल की' उपन्यास सुषम बेदी द्वारा लिखित बहुप्रशंसित उपन्यासों में से एक है। यह उपन्यास नारी जीवन की यथार्थ स्थिति का बड़ा ही सार्थक व सटीक चित्रण करता है। "उपन्यास आरंभ से लेकर अंत तक स्वभाविक रूप से स्त्री मन की अनंत छवियों प्रस्तुत करता है। दूसरे शब्दों में कहें तो, यह उपन्यास नारी मनोविज्ञान का मर्मस्पर्शी चित्र प्रस्तुत करने में सर्वथा सफल रहा है।"[२]

शन्नो इस उपन्यास की अमरबेल है। उसके अमरबेल बनने की प्रक्रिया का वर्णन उपन्यासकार की समाज और मनोविज्ञान की गहरी समझ का संकेत है। शन्नो विश्वा और गौतम पर आश्रित होते हुए भी उनकी मृत्यु का कारण बनती है। अपने बेटे की निजता में हस्तक्षेप करके उसके जीवन रस का सोखती है। सुषम बेदी स्त्री के इस रूप का समर्थन नहीं करतीं। वह स्त्री को स्वतंत्र, आत्मनिर्भर, संयमित, रचनात्मक और अन्य के प्रति सहानुभूतिपूर्ण देखना चाहती है। यह उपन्यास शन्नो वी जटिल मानसिकता और जीवन-स्थितियों के प्रति उत्सवी प्रतिक्रिया को व्यक्त करता है। पुरुष को सफलता एवं संतुष्टि की सीढ़ी बनाने वाली शन्नो की आत्मकेन्द्रिकता अथवा आत्मरति उसके लिए घातक बनती है।

उपन्यास जैसे-जैसे विकसित होता है, शन्नो पाठक की सहानुभूति खोने लगती है। यह स्वयं को केंद में रखने की जितनी ज्यादा कोशिश करती है उसी अनुपात में उसका एकाकीपन बढ़ता जाता है। यह उपन्यात स्त्री-मनोविज्ञान की परतों को उघाड़कर सामाजिक संरचना में उसकी भूमिका को दायित्वपूर्ण बनाने का प्रयास करता है।

उपन्यास की नायिका शन्नो न तो आदर्श व्यक्तित्व की धनी है और न ही वह खल-पात्र है। वह एक सामान्य-सा चरित्र है जो समाज में आजकल जैसे-जैसे नवीन चेतना आ रही है। अपनी अस्मिता को बोध बढ़ता जा रहा है। कहना न होगा, शन्ने एक

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / February 2025 / Special Issue 1 Volume V

यथार्थवादी चरित्र है। गाथा अमरबेल की' उपन्यास में वह विचारधारा काम कर रही है जो अब स्त्री को पारंपरिक या उस खांचे में सम्बद्ध करके दिखाने से परहेज करने का समर्थन करती है जो उसके व्यक्तित्व को सिर्फ देवी, माँ, सहचरी, प्राण' जैसी छवियों पाठक के सामने प्रस्तुत करे। यह अब स्त्री को नये तरीके से प्रोजेक्ट करना बाहती है। डॉ. ओम प्रकाश शर्मा लिखते हैं, "सामाजिक-राजनीतिक परंपराओं में चलती रही कुरीतियों-कुप्रथाओं से जहाँ मुक्ति मार्ग खोजा गया, यहीं बाद में निजी स्तर पर उसके व्यक्तित्व की पहचान बनाने से लेकर सामूहिक उन्नयन व उत्कर्ष की दिशा तक पहुँचा।"[३] अब यह माना जाने लगा है कि व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और पूरी दुनिया तब तक सबल और समर्थ नहीं हो सकती। जब तक उसका आधा अंग सक्षम और सहयोगी की भूमिका में नहीं आ जाता। इस आधार पर कहे तो निश्चय ही नारी को साहित्य के केन्द्र में लाना और उसे पूरी वास्तविकता के साथ प्रस्तुत करना गाथा अमरबेल की उपलब्धि है।

गाथा अमरबेल की शन्नों एक अतृप्त महिला है। उसकी न सिर्फ मानसिक बल्कि शारीरिक क्षुधा भी पति से नहीं मिटती। इसकी ओर संकेत करते हुए सुषम बेदी लिखती है, "तृप्त होकर विश्वा जब सो गया तो शन्नों को लगा उसकी देह अभी भी और मांग रही थी। क्या अन्दाजा था विश्या को कि कितनी गहरी और बेताब प्यास बसी थी उस देहराशि में। उसके बुझाने पर कुछ देर के लिए शांत हो भी जाये पर फिर से भड़क-भड़क उठती थी यह प्यास। जैसे उस शरीर में कोई ज्वालामुखी बसा हो जो बरत्तातों को गटककर भी सुलगता ही रहे।"[४]

हम देख सकते हैं कि सुषम बेदी ने नैतिकता-अनैतिकता की मर्यादा को पार कर जाने वाले सम्बन्धों के पीछे जो सबसे बड़ा व महत्वपूर्ण कारण काम कर रहा होता है, उसको पाठकों के सामने लाने का प्रयास किया है। लेकिन सुषम बेदी उपन्यास की नायिका को सिर्फ यह मर्यादा लांघकर दिखाने वाली शो पीस नहीं बनाए रखती। यह शन्नों को समाज के सामने एक प्रश्न यो रूप में खड़ा करती है।

उपन्यास जैसे-जैसे आगे बढ़ता है शन्नो भी मजबूत होती जाती है, विद्रोहिणी होती जाती है। असल में यह विद्रोह कोई आम बात नहीं है। जब भी व्यक्ति की लक्ष्य-पूर्ति में समाज बाधा बनता है, व्यक्ति में विद्रोह की भावना आ जाती है। यह विद्रोह की भावना समाज तथा उसकी परंपराओं के प्रति होती है। शन्नों की इसी विद्रोह की भावना से आकंत आबद्ध है। स्वयं के वैवाहिक जीवन में एक प्रकार की रिक्तता है जिसे कोई भरने का प्रयास करता है तो शन्नों के सामने वही सामाजिक नीतिका हैं। लेकिन वह इनमें उलझती नहीं है उल्टे प्रयास करता तो समाज से देने जाते देती है- कोई भी औरत अपनी इच्छा से न तो पतिव्रता होती है और न ही सती। यह सब तो उसपर जबर्दस्ती लादा गया होता है। "आदमी खुद तो पत्नीव्रता तो होता नहीं, न ही पानी की चिता पर सती होता है तो भला औरत से यह उम्मीद क्यों की जाती है? हिन्दुस्तानी मर्दों की यह भीग बेहद नाजायज है। खुद के साथ तो यह एक इंसान की तरह व्यवहार करते हुए यह मानते हैं कि ऐसा करना उनके लिए मुमकिन नहीं तो भले मानसो, यह बताओ कि जो तुम खुद नहीं कर सकते वह दूसरे के लिए नियम क्यों हो? क्या यह इंसान से अलग कुछ और है जो उसके लिए नियम मुख्तलिफ हो?"[४]

इतिहास में स्त्रियों का बड़ा सम्मान था, उनको सभी अधिकार प्राप्त थे लेकिन कालांतर में उनके सारे अधिकार समाज अपनी सुविधा के हिसाब से छिनता गया। एक वक्त ऐसा भी आया कि स्त्रियों घर की चारदीवारी में कैद होती गई। "स्त्रियों का यह दमन-काल या ग्रहण-काल बहुत लम्बा बला। लेकिन, स्वतंत्रता के बाद जब देश की दशा और दिशा बदली तो स्त्रियों को भी अधिकार-बोध होना आरंभ हुआ।"[५] इस अधिकार-बोध का एक प्रकार यह भी था कि अब स्त्रियों को यह समझ में आने लगा कि किसी भी प्रकार का अधूरापन भाग्य की देन मानकर भोगने के बजाय उसको दूर करने का प्रयास करना चाहिए फिर चाहे रास्ता पजैसी भी हो।

शन्नो जब अपने पति से असन्तुष्ट होती है तो वह उसे अपने भाग्य नहीं मानती बल्कि अपने पति के मित्र हरीश के साथ विवाहेत्तर सम्बन्ध विकसित कर लेती है। विश्वा के साथ मिलने वाली नीरसता का स्थान हरीश से मिलने वाला आनंद ले लेता है- शन्नों का अचानक अपना नया माहौल अच्छा लगने लगा था। जिन्दगी की एकरस लम्बाइयों पर कितने ही विराम चिन्ह लग गये थे। अब उस सूनेपन में भी सुख था।

यद्यपि, शन्नों में विशुद्ध भारतीय वर्जनाओं के अंदर में डूब उत्तरकर नया व्यक्तित्व गढ़ती स्त्री की संघर्षशीलता है। "लेकिन शन्नो आरंभ से ही ऐसी नहीं थी। आज की विद्रोहिणी शन्नो कभी बहतु ही चुटी पुटी सी रहती थी। जब उसका पति विश्वा अपने परस्त्री प्रेम के बारे में उसको बताता है तो वह लगभग टूट-सी जाती है। स्वयं को पीड़ा देने लगती है।"[६]

सुषम बेदी इस प्रसंग का प्रयोग शन्नों के व्यक्तित्व में आगे होने वाले ट्रांसफार्मेशन को पाठक के सामने और अधिक उभारने के लिए करती है। तात्पर्य यह है कि व्यक्ति का व्यक्तित्व, विचार मान्यता, मूल्य या विचारधारा कभी अंतिम नहीं रहता। समय के साथ यह बदलता रहता है। समय के साथ कुछ लोग कमजोर होते हैं तो कुछ लोग मजबूत। आज की शम्नो कभी अपने दर्द को छुपा भी नहीं पाती थी। यहीं तो उसे विश्या के खिलाफ कदम उठाना चाहिए जबकि वह खुद को ही पीड़ा देने लगती है 'रोई हुई आँखों की

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / February 2025 / Special Issue 1 Volume V

दास्तान बहुत छुप नहीं सकती। ताईजी ने पूछ ही लिया, क्या बात है। आँख इतनी लाल और सूजी सूजी सी हैं। क्या रोती रही है तू? ना-ना ताईजी। किरकिरी घुस गई थी। ज्यादा मलने से सूज गई।"[७]

लेकिन यही शन्नो समय के साथ भावनात्मक रूप से मजबूत होती है। उसकी भावनात्मक खुराक बदलती है। परिणाम यह होता है कि उसके प्रेम संबंधों में भी बदलाव आने लगता है। प्रेम वास्तव में बहुत ही सहज व स्वाभाविक चीज है। एक स्त्री व पुरुश के साहचर्य में प्रेन का अंकुर फूटना बहुत ही सहज बात है। प्रेम की बड़ा ही पवित्र माना भी माना गया है लेकिन विवाहित स्त्री को पर पुरुष से प्रेम होना समाज के लिये बडा ही अरुचिकर होता है। सुषम बेदी शन्नों के माध्यम से यही अरुचिकर विषय उठाती है तथा स्त्री का एक मजबूत पक्ष सामने लाती है कि जब इंसान प्रेम का भूखा होता है, तो उसे स्त्री-पुरुष में विभाजित नहीं करना चाहिए। सबके लिए समान नियम होने चाहिए। यहाँ ध्यान देने वाली बात है कि शन्नों का प्रेम आज का तथाकथित प्रेम नहीं है जो दैहिक ज्यादा होता है आत्मिक कम।

शन्नों का प्रेम भावनात्मक अभाव की पूर्ति का प्रयास है। वह स्त्रीत्व को सिद्ध करने का प्रयास है। समाज में बराबरी की भावना के लिये तैयार रहने वाली विचारधारा की सिद्धि का प्रयास है। यह आरम्भ से ही एकनिष्ठता ही चाहती है, पर विश्वा से एकनिष्ठता न मिलने पर वह भी उसी राह पर बढ़ जाती है जो कहीं न कहीं विश्वा ने ही उसे दिखाया था।

**निष्कर्ष :**

१. 'गाथा अमरबेल की' उपन्यास में स्त्री मनोविज्ञान को भावनात्मक स्तर पर पुरुषों के साथ समान धरातल पर खड़ा करता है। स्त्री के उस रूप को दिखाने का प्रयास करता है ।
२. जहाँ स्त्री पीड़ा को नियति मानकर भोगती नहीं है बल्कि वह सदैव इस पीड़ा से मुक्ति का माध्यम खोजती रहती है। उसके लिए प्रेम दैवीय वस्तु न होकर भावनात्मक खुराक है।
३. स्त्री तब तक कमज़ोर है, स्वपीड़ा में जीवन व्यतीत कर रही है लेकिन वह जैसे ही इससे निकलती है किसी से कमजोर सिद्ध नहीं होती। न हे भावनात्मक स्तर पर न ही वैचारिक स्तर पर।
४. नारी तर्क लागू कर लेती है जो पुरुष समाज ने अपने लिये तैयार किये थे। अतः यह उपन्यास नारी मनोविज्ञान का मर्मस्पर्शी चित्र प्रस्तुत करने में सर्वथा सफल रहा है।

**सन्दर्भ ग्रंथ :-**

१. प्रेमचन्द, विविध प्रसंग, हंस प्रकाशन, १९६२, पृ. क्र. ७६
२. शर्मा ओमप्रकाश, समकालीन महिला लेखन, पूजा प्रकाशन, लक्ष्मी नगर, दिल्ली, प्रथम संस्करण, २००२, पृ. क्र. १७९
३. बेदी सुषम, गाथा अमरबेल की, हिन्दी बुक सेंटर, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, २०१७, पृ. क्र. ५७
४. वही पृ. क्र. ११२
५. वही पृ. क्र. १५९
६. अग्रवाल रोहिणी, समकालीन कथा साहित्य सरहदें और सरोकार, आधार प्रकाशन, पंचकुला, २०१२, पृ. क्र. १८८
७. उपरोक्त, गाथा अमरबेल की, पृ. क्र. 10